॥ श्री शांतिनाथाय नमः ॥ ॥ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथाय नमः ॥ ॥ श्री वज्रस्वामिने नमः ॥

कलापूर्णोऽस्तु मंगलम्

प.पू. अध्यात्मयोगी आ.भ. श्रीमद्विजय कलापूर्णसूरीश्वरजी महाराजा
जन्मशताब्दी वर्ष निमित्त

अजितशांति कंठस्थ कला

संकलन

प.पू. आ.भ. श्रीमद्विजय तत्त्वदर्शनसूरीश्वरजी महाराज

AJIT-SHANTI KANTHASTH KALA
Navbharat Sahitya Mandir, AHMEDABAD

₹ 30/-

प्रकाशक
महेन्द्र पी. शाह
नवभारत साहित्य मंदिर
जैन देरासर के पास, गांधी रोड, अहमदाबाद-३८०००१
फोन: (०७९) २२१३९२५३, २२१३२९२४
E-mail : info@navbharatonline.com Web : www.navbharatonline.com
fb.com/NavbharatSahityaMandir

Know More

प्राप्तिस्थान : कृपया WhatsApp पर मेसेज भेजे।

1. **Kirti Murji Rambhia -** (W) 9867-5522-87
   A1 Collection LLP, GF/11, Indraprastha,
   S.V. Road,Borivali (W), Op. Jamli Gali, Mumbai - 400092
3. **Sri KalaPurnasuri Aaradhana Bhuvan -** (W) 98244-72901
   B/s. Parth Flats, Sopan Flat Gali, Opp. Red Cross Blood Banks,
   B/h. Suvidhi, Paldi, Ahmedabad-380007

कृपया ध्यान दे।

* कडी-जोडाण पद्धति सूत्र कंठस्थ करनेकी सालो पुरानी जादूई कला है ।
* यह पद्धतिके मुताबिक हर गाथाका चार या ज्यादा विभाजन कीया है । गाथाके प्रथम पदको, गाथाके दूसरे पदके साथ ३०-४०-५० बार उंची आवाजसे रटना जरुरी है ।

उदा. श्री अजितशांतिकी प्रथम गाथाका प्रथम पद
"अजिअं-जिअ सव्व-भयं" को ३०-४०-५० बार रटना है ।
बादमें "अजिअं-जिअ सव्व-भयं + संतिं च पसंत"
बादमें "संतिं च पसंत + सव्व-गय-पावं"
बादमें "सव्व-गय-पावं + जय-गुरु संति-गुण-करे" ।।

आपके क्षयोपशम मुताबिक ३०-४०-५० बार उंची आवाजसे रटना जरुरी है । इस प्रकार बाकी सब गाथा कंठस्थ करना चाहिए ।

* यह पद्धतिसे कंठस्थ कीया सूत्र दीर्घकाल नवकार मंत्रकी तरह याद रहता है।
* आपको सिर्फ कडी-जोडाण पद्धति अनुसार सूत्र रटना है । अब जादू यह होगा की "जब आप सूत्र कंठस्थ बोलेंगे तब left side का कडी-जोडाण विभाग अपने आप नीकल जायेगा ।" और सूत्रकी गाथाके बाद गाथा Non-Stop चलेगी।
* सूत्र कंठस्थ करनेके लिए यह पद्धति शायद आपको पसंद नहीं आयेगी । फिर भी आपने यह पद्धतिको अपनाया तो आपका बेडा पार ।
* हमारे अनुभव मुताबिक मंद क्षयोपशमवाले श्रावक/श्राविका वंदित्तु, लघुशांति, अजितशांति, अतिचार जैसे बडे सूत्र देवसिअ/पाक्षिक प्रतिक्रमणमें कंठस्थ बोलते है । अब आप खुद प्रयत्न करे और चमत्कार देखे ।

यह पुस्तिका शुद्ध एवं स्वद्रव्यसे मुद्रित की गई है।

अन्य वर्तमान संकलन

१. **सूत्र कंठस्थ कला** (दो प्रति० सूत्रोके लिए)

२. **सूत्र कंठस्थ कला-२** (पक्खी प्रति० सूत्रोके लिए)

३. **अतिचार कंठस्थ कला** (लघुशांतिके साथ)

४. **वंदित्तु कंठस्थ कला** (लघुशांतिके साथ)

५. **अजितशांति! कंठस्थ कला**

सूत्रमें गाथाके बाद गाथा याद करनेकी Master Key

आद्याक्षर कार्ड = हर गाथाका प्रथम प्रथम अक्षर

- सकलार्हत्
- अजितशांति, संतिकरं
- बडी शांति, लघु शांति
- भरहेसर, सकलतीर्थ
- भक्तामर कल्याण मंदिर

श्री अजितशांति स्तव

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

(अजि, व, स, अजि, कि)

१		अजिअं-जिअ सव्व-भयं,
२	अजिअं-जिअ सव्व-भयं,	संतिं च पसंत
३	संतिं च पसंत	सव्व-गय-पावं ।
४	सव्व-गय-पावं ।	जय-गुरु संति-गुण-करे,
५	जय-गुरु संति-गुण-करे,	दो वि जिणवरे
६	दो वि जिणवरे	पणिवयामि ॥ १॥गाहा॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१	पणिवयामि ॥ १॥ गाहा॥	ववगय-मंगुल-भावे
२	ववगय-मंगुल-भावे	ते हं विउल-तव
३	ते हं विउल-तव	निम्मल सहावे
४	निम्मल सहावे	निरुवम-महप्पभावे,
५	निरुवम-महप्पभावे,	थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २॥गाहा॥

१	थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे गाहा	सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं,
२	सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं,	सव्व-पाव-प्पसंतीणं ।
३	सव्व-पाव-प्पसंतीणं ।	सया अजिअ-संतीणं,
४	सया अजिअ-संतीणं,	नमो अजिअ संतीणं ॥ ३॥सिलोगो॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१	नमो अजिअ संतीणं सिलोगो	अजिअ-जिण! सुह-प्पवत्तणं,
२	अजिअ-जिण! सुह-प्पवत्तणं,	तव पुरिसुत्तम! नाम-कित्तणं ।
३	तव पुरिसुत्तम! नाम-कित्तणं ।	तह-य धिइ-मइ-प्पवत्तणं,
४	तह-य धिइ-मइ-प्पवत्तणं,	तव य जिणुत्तम!
५	तव य जिणुत्तम!	संति! कित्तणं! ॥ ४॥मागहिआ

१	संति! कित्तणं! मागहिआ	किरिआ-विहि संचिअ
२	किरिआ-विहि संचिअ	कम्म-किलेस-विमुक्खयरं
३	कम्म-किलेस-विमुक्खयरं	अजिअं-निचिअं च गुणेहिं
४	अजिअं-निचिअं च गुणेहिं	महा-मुणि-सिद्धि-गयं ।

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ महा-मुणि-सिद्धि-गयं ।	अजिअस्स य संति
६ अजिअस्स य संति	महा-मुणिणो
७ महा-मुणिणो	वि-य संति-करं
८ वि-य संति-करं	सययं मम निव्वुइ
९ सययं मम निव्वुइ	कारणयं च, नमं सणयं ॥५॥आलिंगणयं॥

(पु, अर, तं, सा, अजि)

१ कारणयं च, नमं सणयं आलिंगणयं	पुरिसा! जई दुक्ख-वारणं,
२ पुरिसा! जई दुक्ख-वारणं,	जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं ।
३ जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं।	अजिअं संतिं च भावओ

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
४ अजिअं संतिं च भावओ	अभय करे सरणं
५ अभय करे सरणं	पवज्जहा ॥६॥मागहिआ॥

१ अभय करे सरणं पवज्जहा मागहिआ	अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअ-
२ अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअ-	मुवरय-जर-मरणं,
३ मुवरय-जर-मरणं	सुर-असुर-गरुल
४ सुर-असुर-गरुल	भुयग-वइ पयय पणिवइअं ।
५ भुयग-वइ पयय पणिवइअं ।	अजिअ-महमवि अ
६ अजिअ-महमवि अ	सुनय-नय-निऊण-मभयकरं,

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
७ सुनय-नय-निऊण-मभयकरं,	सरण-मुवसरिअ
८ सरण-मुवसरिअ	भुवि- दिवि-ज-महिअं
९ भुवि- दिवि-ज-महिअं	सयय-मुवणमे ॥७॥ संगययं
१ सयय-मुवणमे संगययं	तं च जिणुत्तम-
२ तं च जिणुत्तम-	मुत्तम-नित्तम सत्तधरं,
३ मुत्तम-नित्तम सत्तधरं,	अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति
४ अज्जव-मद्दव-खंति विमुत्ति	-समाहि निहिं ।

www.sootrakanthasth.com

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ खंति-विमुत्ति-समाहि निहिं ।	संतिकरं पणमामि
६ संतिकरं पणमामि	दमुत्तम-तित्थयरं,
७ दमुत्तम-तित्थयरं,	संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं
८ संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं	दिसउ ॥८॥सोवाणयं॥
१ समाहि-वरं दिसउ सोवाणयं	सावत्थि-पुव्व पत्थिवं च,
२ सावत्थि-पुव्व पत्थिवं च,	वर-हत्थि-मत्थय
३ वर-हत्थि-मत्थय	पसत्थ विच्छिन्न संथिअं,
४ पसत्थ विच्छिन्न संथिअं,	थिर-सरिच्छ-वच्छं
५ थिर-सरिच्छ-वच्छं	मय-गल-लीलायमाण-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
६ मय-गल-लीलायमाण-	वर-गंध-हत्थि पत्थाण-
७ वर-गंध-हत्थि पत्थाण-	पत्थिअं संथवारिहं,
८ पत्थिअं संथवारिहं,	हत्थि-हत्थ बाहुं,
९ हत्थि-हत्थ बाहुं,	धंत कणग-रुअग-
१० धंत कणग-रुअग-	निरुवहय-पिंजरं,
११ निरुवहय-पिंजरं,	पवर-लक्खणोवचिअ-
१२ पवर-लक्खणोवचिअ-	सोम-चारु-रुवं,
१३ सोम-चारु-रुवं,	सुइ-सुह-मणाभिराम
१४ सुइ-सुह-मणाभिराम	परम-रमणिज्ज-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१५ परम-रमणिज्ज-	वर देव-दुंदुहि-निनाय महुरयर-
१६ वर देव-दुंदुहि-निनाय महुरयर-	सुह-गिरं ॥९॥वेड्ढओ॥
१ महुरयर-सुह-गिरं वेड्ढओ	अजिअं जिआरिगणं,
२ अजिअं जिआरिगणं,	जिअ-सव्व-भयं भवोहरिउं ।
३ जिअ-सव्व-भयं भवोहरिउं ।	पणमामि अहं पयओ,
४ पणमामि अहं पयओ,	पावं पसमेउ मे भयवं ॥१०॥रासालुद्धओ॥

(कु, तं, इक्खा, दे, वि)

१ पावं पसमेउ मे भयवं रासालुद्धओ	कुरू-जण-वय-
२ कुरू-जण-वय-	हत्थिणा-उर-नरीसरो

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३	हत्थिणा-उर-नरीसरो	पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए
४	पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए	मह-प्पभावो
५	मह-प्पभावो	जो बावत्तरि-पुर-वर-
६	जो बावत्तरि-पुर-वर-	सहस्स-वर-नगर-निगम
७	सहस्स-वर-नगर-निगम	जण-वय-वइ
८	जण-वय-वइ	बत्तीसा - राय-वर-
९	बत्तीसा - राय-वर-	सहस्सा-णुयाय- मग्गो
१०	सहस्सा-णुयाय- मग्गो	चउदस-वर-रयण
११	चउदस-वर-रयण	नव-महानिहि

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१२	नव-महानिहि	चउसट्ठि-सहस्स-पवर-
१३	चउसट्ठि-सहस्स-पवर-	जुवईण,सुंदर-वई,
१४	जुवईण,सुंदर-वई,	चुलसी-हय-गय-रह-सय
१५	चुलसी-हय-गय-रह-सय	सहस्स-सामी छन्नवइ-
१६	सहस्स-सामी छन्नवइ-	गाम-कोडि-सामी,आसी जो
१७	गाम-कोडि-सामी,आसी जो	भारहंमि भयवं ॥ ११॥वेड्ढओ॥
१	जो भारहंमि भयवं वेड्ढओ	तं संतिं संति-करं,
२	तं संतिं संति-करं,	संतिण्णं सव्व-भया ।

कडी-जोडाण		मूल-गाथा
३	संतिण्णं सव्व-भया ।	संतिं थुणामि जिणं,
४	संतिं थुणामि जिणं,	संतिं विहेउ मे ॥१२॥रासा-नंदिअयं॥

१	संतिं विहेउ मे रासा-नंदिअयं	इक्खाग! विदेह! नरीसर!
२	इक्खाग! विदेह! नरीसर!	नर-वसहा! मुणि-वसहा!
३	नर-वसहा! मुणि-वसहा!	नव- सारय-ससि सकलाणण!
४	नव- सारय-ससि सकलाणण!	विगय-तमा! विहुअ-रया!
५	विगय-तमा! विहुअ-रया!	अजि! उत्तम-तेअ! गुणेहिं
६	अजि! उत्तम-तेअ! गुणेहिं	महा-मुणि! अमिअ-बला! विउल-कुला!

कडी-जोडाण		मूल-गाथा
७	महा-मुणि! अमिअ-बला!	
	विउल-कुला!	पणमामि ते भव-भय-मूरण!
८	पणमामि ते भव-भय-मूरण!	जग-सरणा! मम सरणं॥१३॥चित्तलेहा॥

१	जग-सरणा! मम सरणं चित्तलेहा	देव-दाण-विंद-चंद
२	देव-दाण-विंद-चंद	सूर-वंद! हट्ठ-तुट्ठ जिट्ठ!
३	सूर-वंद! हट्ठ-तुट्ठ जिट्ठ!	परम-लट्ठ रूव!
४	परम-लट्ठ रूव!	धंत-रूप्प-पट्ट-सेय-
५	धंत-रूप्प-पट्ट-सेय-	सुद्ध-निद्ध-धवल,
६	सुद्ध-निद्ध-धवल,	दंत-पंति-संति!

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
७ दंत-पंति-संति!	सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर!
८ सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर!	दित्त-तेअ-वंद-धेय!
९ दित्त-तेअ-वंद-धेय!	सव्वलोअ भाविअप्प-भाव!
१० सव्वलोअ भाविअप्प-भाव!	णेय! पइस मे समाहिं ॥ १४॥नारायओ॥

१ णेय! पइस मे समाहिं, नारायओ	विमल-ससि-
२ विमल-ससि-	कलाइरेअ-सोमं,
३ विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं,	वितिमिर-सूर-
४ वितिमिर-सूर-	कराइरेअ-तेअं ।

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं ।	तिअसवइ-गणाइरेअ-रूवं,
६ तिअसवइ-गणाइरेअ-रूवं,	धरणि धर-प्पवराइ-रेअ-सारं ॥ १५॥कुसुम लया॥

(स, सो, ति, वि, असु)

१ धरणि धर-प्पवराइ-रेअ- सारं कुसुमलया	सत्ते अ सया अ-जिअं,
२ सत्ते अ सया अ-जिअं,	सारीरे अ बले अ-जिअं ।
३ सारीरे अ बले अ-जिअं ।	तव-संजमे अ अ-जिअं,
४ तव-संजमे अ अ-जिअं,	एस थुणामि जिणं अ-जिअं अजिअं ॥ १६॥भुअग-परिरिंगिअं॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१	जिणं अजिअं भुअग-परिरिंगिअं	सोम-गुणेहिं पावइ न तं
२	सोम-गुणेहिं पावइ न तं	नव-सरय-ससी,
३	न तं नव-सरय-ससी,	तेअ-गुणेहिं पावइ न तं
४	तेअ-गुणेहिं पावइ न तं	नव-सरय-रवी ।
५	न तं नव-सरय-रवी ।	रूव-गुणेहिं पावइ न तं
६	रूव-गुणेहिं पावइ न तं	तिअस-गण वई,
७	न तं तिअस-गण वई,	सार-गुणेहिं पावइ न तं
८	सार-गुणेहिं पावइ न तं	धरणि-धर-वई ॥ १७॥खिज्जिअयं॥
१	धरणि-धर-वई खिज्जिअयं	तित्थ-वर-पवत्तयं,
२	तित्थ-वर-पवत्तयं,	तम-रय-रहियं,

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३	तम-रय-रहियं,	धीर-जण-थुअच्चिअं,
४	धीर-जण-थुअच्चिअं,	चुअ-कलि-कलुसं ।
५	चुअ-कलि-कलुसं ।	संति सुह प्पवत्तयं,
६	संति सुह प्पवत्तयं,	तिगरण-पयओ,
७	तिगरण-पयओ,	संति महं महा-मुणिं
८	संति महं महा-मुणिं	सरण-मुवण-मे ॥ १८॥ललिअयं
१	सरण-मुवण-मे ललिअयं	विणओणय-सिरि-रइ-अंजलि-
२	विणओणय-सिरि-रइ-अंजलि-	रिसि गण-संथुअं थिमिअं,
३	रिसि गण-संथुअं थिमिअं,	विबुहाहिव-धणवइ-नर वइ-

कडी-जोडाण		मूल-गाथा
४	विबुहाहिव-धणवइ-नर वइ-	थुअ-महि-अच्चिअं बहुसो!
५	थुअ-महि-अच्चिअं बहुसो!	अइरुग्गय-सरय-दिवायर-
६	अइरुग्गय-सरय-दिवायर-	समहिअ-सप्पभं तवसा,
७	समहिअ-सप्पभं तवसा,	गयणं-गण-वियरण-
८	गयणं-गण-वियरण-	समुइअ-चारण-वंदिअं
९	समुइअ-चारण-वंदिअं	सिरसा ॥१९॥किसलयमाला॥
१	वंदिअं सिरसा किसलयमाला	असुर-गरुल-परिवंदियं,
२	असुर-गरुल-परिवंदियं,	किन्नरोरग-नमंसिअं ।
३	किन्नरोरग-नमंसिअं ।	देव-कोडि-सय-संथुअं,

कडी-जोडाण		मूल-गाथा
४	देव-कोडि-सय-संथुअं,	समण-संघ-परिवंदिअं ॥२०॥सुमुहं॥

(अभ, आग, जं, वं, तं)

१	समण-संघ-परिवंदिअं सुमुहं	अभयं अणहं,
२	अभयं अणहं,	अरयं अरुयं,
३	अरयं अरुयं,	अजिअं अजिअं,
४	अजिअं अजिअं,	पयओ पणमे ॥२१॥विज्जुविलसिअं॥
१	पयओ पणमे विज्जुविलसिअं	आगया वर-विमाण-
२	आगया वर-विमाण-	दिव्व-कणग-रह-तुरय-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३ दिव्व-कणग-रह-तुरय-	पह-कर सएहिं-हुलिअं ।
४ पह-कर सएहिं-हुलिअं ।	स-संभमोअरण-खुभिअ-
५ स-संभमोअरण-खुभिअ-	लुलिअ-चल-कुंडलंगय-
६ लुलिअ-चल-कुंडलंगय-	तिरीड-सोहंत-
७ तिरीड-सोहंत-	मउलि माला ॥२२॥वेड्ढओ॥
१ मउलि माला वेड्ढओ	जं सुर-संघा सासुर-संघा
२ जं सुर-संघा सासुर-संघा	वेर-विउत्ता भत्ति-सु-जुत्ता,
३ वेर-विउत्ता भत्ति-सु-जुत्ता,	आयर-भूसिअ-
४ आयर-भूसिअ-	संभम-पिंडिअ-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५ संभम-पिंडिअ-	सुट्ठु-सुविम्हिअ-सव्वबलोघा ।
६ सुट्ठु-सुविम्हिअ-सव्वबलोघा ।	उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-
७ उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-	भासुर-भूसण-भासुरिअंगा,
८ भासुर-भूसण-भासुरिअंगा,	गाय-समोणय-
९ गाय-समोणय-	भत्ति-वसागय-
१० भत्ति-वसागय-	पंजलि-पेसिअ-
११ पंजलि-पेसिअ-	सीस-पणामा ॥२३॥रयणमाला॥
१ सीस-पणामा रयणमाला	वंदिऊण थोऊण तो जिणं,
२ वंदिऊण थोऊण तो जिणं,	ति-गुणमेव य

कडी-जोडाण		मूल-गाथा	
३	ति-गुणमेव य	पुणो पया-हिणं ।	
४	पुणो पया-हिणं ।	पणमिऊण य जिणं सुरासुरा,	
५	पणमिऊण य जिणं सुरासुरा,	पमुइआ स-भवणाइं	
६	पमुइआ स-भवणाइं	तो गया	॥२४॥खित्तयं॥
१	स-भवणाइं तो गया खित्तयं	तं महा-मुणि-महं-पि पंजली,	
२	तं महा-मुणि-महं-पि पंजली,	राग-दोस-भय-मोहवज्जियं ।	
३	राग-दोस-भय-मोहवज्जियं ।	देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं,	
४	देव-दाणव-नरिंद-वंदिअं,	संति-मुत्तमं महातवं नमे ॥२५॥खित्तयं॥	

कडी-जोडाण		मूल-गाथा	
		(अंब, पी, दे, त, थु)	
१	संति-मुत्तमं महातवं नमे खित्तयं	अंबरंतर-विआरणिआहिं,	
२	अंबरंतर-विआरणिआहिं,	ललिअ-हंस-वहु-	
३	ललिअ-हंस-वहु-	गामिणिआहिं,	
४	गामिणिआहिं,	पीण-सोणि-थण-	
५	पीण-सोणि-थण-	सालिणिआहिं,	
६	सालिणिआहिं,	सकल-कमल-दल-	
७	सकल-कमल-दल-	लोअणिआहिं	॥२६॥दीवयं॥
१	लोअणिआहिं दीवयं	पीण-निरंतर-थणभर-	
२	पीण-निरंतर-थणभर-	विणमिय-गाय-लआहिं,	

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३	विणमिय-गाय-लआहिं,	मणि-कंचण-पसिढिल-मेहल
४	मणि-कंचण-पसिढिल-मेहल	सोहिअ-सोणि-तडाहिं ।
५	सोहिअ-सोणि-तडाहिं ।	वर-खिंखिणि-नेउर-
६	वर-खिंखिणि-नेउर-	सतिलय-वलय-
७	सतिलय-वलय-	विभूसणिआहिं ।
८	विभूसणिआहिं ।	रइ-कर-चउर-मणोहर-
९	रइ-कर-चउर-मणोहर-	सुंदर-दंसणिआहिं ॥२७॥चित्तक्खरा॥
१	सुंदर-दंसणिआहिं चित्तक्खरा	देव-सुंदरीहिं पाय-वंदिआहिं,
२	देव-सुंदरीहिं पाय-वंदिआहिं,	वंदिया य जस्स

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३	वंदिया य जस्स	ते सुविक्कमा कमा,
४	ते सुविक्कमा कमा,	अप्पणो निडालएहिं,
५	अप्पणो निडालएहिं,	मंडणोड्डणप्पगारएहिं
६	मंडणोड्डणप्पगारएहिं	केहिं केहिं वि;
७	केहिं केहिं वि;	अवंग-तिलय-
८	अवंग-तिलय-	पत्तलेह-नामएहिं
९	पत्तलेह-नामएहिं	चिल्लएहिं संगयं गयाहिं,
१०	चिल्लएहिं संगयं गयाहिं,	भत्ति सन्निविट्ठ-
११	भत्ति सन्निविट्ठ-	वंदणागयाहिं,
१२	वंदणागयाहिं,	हुंति ते वंदिआ
१३	हुंति ते वंदिआ	पुणो पुणो ॥२८॥नारायओ॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१	वंदिआ पुणो पुणो, नारायओ	तमहं जिण-चंदं,
२	तमहं जिण-चंदं,	अजिअं जिअ-मोहं,
३	अजिअं जिअ-मोहं,	धुय-सव्व-किलेसं,
४	धुय-सव्व-किलेसं,	पयओ पणमामि ॥२९॥नंदिअयं॥

१	पयओ पणमामि नंदिअयं	थुअ-वंदिअयस्सा
२	थुअ-वंदिअयस्सा	रिसि-गण-देव-गणेहिं,
३	रिसि-गण-देव-गणेहिं,	तो देव-वहुहिं,
४	तो देव-वहुहिं,	पयओ पणमिअस्सा ।
५	पयओ पणमिअस्सा ।	जस्स जगुत्तम-सासण-अस्सा,
६	जस्स जगुत्तम-सासण-अस्सा,	भत्ति-वसागय-पिंडिअयाहिं ।

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
७	भत्ति-वसागय-पिंडिअयाहिं ।	देववरच्छरसा-बहुआहिं,
८	देववरच्छरसा-बहुआहिं,	सुरवर-रइगुण-पंडिअयाहिं ॥३०॥भासुरयं॥

(वं, छ, स, ते, एवं)

१	सुरवर-रइगुण-पंडिअयाहिं, भासुरयं	वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए,
२	वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए,	ति-उक्खराभिराम-
३	ति-उक्खराभिराम-	सद्द-मीसए कए अ ।
४	सद्द-मीसए कए अ ।	सुइ-समाण-णेअ-
५	सुइ-समाण-णेअ-	सुद्ध-सज्ज-गीय-
६	सुद्ध-सज्ज-गीय-	पाय-जाल-घंटिआहिं,

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
७ पाय-जाल-घंटिआहिं,	वलय-मेहला-कलाव-
८ वलय-मेहला-कलाव-	नेउराभिराम-सद्द-मीसए कए अ,
९ नेउराभिराम-सद्द-मीसए कए अ,	देव-नट्टिआहिं हाव-भाव
१० देव-नट्टिआहिं हाव-भाव	विब्भमप्पगारएहिं,
११ भाव-विब्भमप्पगारएहिं,	नच्चिउण अंग-हारएहिं,
१२ नच्चिउण अंग-हारएहिं,	वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
१३ वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,	तयं ति-लोय-सव्व-सत्त-संति-कारयं,
१४ तयं ति-लोय-सव्व-सत्त-संति-कारयं,	पसंत-सव्व-पाव-दोस-मेस हं,
१५ पसंत-सव्व-पाव-दोस-मेस हं,	नमामि संति मुत्तमं जिणं ॥३१॥नारायओ॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१ नमामि संति मुत्तमं जिणं नारायओ	छत्त-चामर-पडाग-जुअ-जव-मंडिआ,
२ छत्त-चामर-पडाग-जुअ-जव-मंडिआ,	झयवर-मगर-तुरय-सिरिवच्छ-सुलंछणा,
३ झयवर-मगर- तुरय-सिरिवच्छ-सुलंछणा,	दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिआ,
४ दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिआ,	सत्थिअ-वसह-सीह-
५ सत्थिअ-वसह-सीह-	रह-चक्क-वरंकिया ॥ ३२॥ललिअयं॥
१ वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया ललिअयं	सहाव-लट्ठा सम-प्पइट्ठा,
२ सहाव-लट्ठा सम-प्पइट्ठा,	अ-दोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा,
३ अ-दोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा,	पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा,
४ पसाय सिट्ठा तवेण पुट्ठा,	सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३॥वाणवासिआ॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१ सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा वाणवासिआ	ते तवेण धुअ-सव्व-पावया,
२ ते तवेण धुअ-सव्व-पावया,	सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया,
३ सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया,	संथुआ अ-जिअ-संति-पायया,
४ संथुआ अ-जिअ-संति-पायया,	हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४॥अपरांतिका॥
१ हुंतु मे सिव-सुहाण दायया अपरांतिका	एवं तव-बल-विउलं,
२ एवं तव-बल-विउलं,	थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं,
३ थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं,	ववगय-कम्म-रय-मलं,
४ ववगय-कम्म-रय-मलं,	गईं गयं सासयं विउलं ॥ ३५॥गाहा॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
(तं, तं, प, जो, ज)	
१ गईं गयं सासयं विउलं गाहा	तं बहु-गुण-प्पसायं,
२ तं बहु-गुण-प्पसायं,	मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं,
३ मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं,	नासेउ मे विसायं,
४ नासेउ मे विसायं,	कुणउ अ परिसावि अप्पसायं ॥ ३६॥गाहा॥
१ कुणउ अ परिसावि अप्पसायं गाहा	तं मोएउ अ नंदिं,
२ तं मोएउ अ नंदिं,	पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं,
३ पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं,	परिसा वि अ सुह-नंदिं,
४ परिसा वि अ सुह-नंदिं,	मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७॥गाहा॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१	मम य दिसउ संजमे नंदिं गाहा	पक्खिअ-चाउम्मासिअ-
२	पक्खिअ-चाउम्मासिअ-	संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो,
३	संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो,	सोअव्वो सव्वेहिं,
४	सोअव्वो सव्वेहिं,	उवसग्ग-निवारणो एसो ॥३८॥

१	उवसग्ग-निवारणो एसो ॥३८॥	जो पढइ जो अ निसुणइ,
२	जो पढइ जो अ निसुणइ,	उभओ कालंपि अजिअ-संति-थयं,
३	उभओ कालंपि अजिअ-संति-थयं,	न हु हुंति तस्स रोगा,
४	न हु हुंति तस्स रोगा,	पुव्वुप्पन्ना वि नासंति ॥३९॥

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१	पुव्वुप्पन्ना वि नासंति	जइ इच्छह परम-पयं,
२	जइ इच्छह परम-पयं,	अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे ।
३	अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे ।	ता तेलुक्कुद्धरणे,
४	ता तेलुक्कुद्धरणे,	जिण-वयणे आयरं कुणह ॥४०॥

कृपया, आपश्री यह पुस्तिकाकी
कडीजोडाण पद्धतिके बारेमें आपकी
+ve/-ve कोमेन्ट/अभिप्राय दे।
WhatsApp No. 9023-10-5342

श्री बृहद् शांति स्तोत्रम्

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा

क्षयोपशम मुताबिक हर कडीको ३०-४०-५० बार रटना है।

आद्याक्षर (भो, भो, ॐ पु, ॐ ऋष, ॐ मु)

१		भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं
२	भो भो भव्याः !शृणुत वचनं	प्रस्तुतं सर्वमेतद्,
३	प्रस्तुतं सर्वमेतद्,	ये यात्रायां त्रिभुवन-
४	ये यात्रायां त्रिभुवन-	गुरो-रार्हता भक्ति-भाजः,
५	गुरो-रार्हता भक्ति-भाजः,	तेषां शान्ति-र्भवतु भवता-
६	तेषां शान्ति-र्भवतु भवता-	मर्हदादि-प्रभावा-

	कडी-जोडाण	मूल-गाथा
७	मर्हदादि-प्रभावा-	दारोग्य-श्री धृति-मति-करी
८	दारोग्य-श्री धृति-मति-करी	क्लेश-विध्वंस-हेतुः ॥ १॥
९	क्लेश-विध्वंस-हेतुः॥	भो भो भव्य-लोकाः ! इह हि
१०	भो भो भव्य-लोकाः ! इह हि	भरतैरावत-विदेह-संभवानां
११	भरतैरावत-विदेह-संभवानां	समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन
१२	समस्त-तीर्थकृतां जन्मन्यासन	प्रकम्पा-नन्तरमवधिना विज्ञाय,
१३	प्रकम्पा-नन्तरमवधिना विज्ञाय,	सौधर्माधिपतिः
१४	विज्ञाय, सौधर्माधिपतिः	सुघोषा-घंटा-चालनानन्तरं
१५	सुघोषा-घंटा-चालनानन्तरं	सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य,

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१६ सकल-सुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य,	सविनय-मर्हद्-भट्टारकं
१७ सविनय मर्हद्-भट्टारकं	गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रि-शृङ्गे,
१८ गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रि-शृङ्गे,	विहित-जन्माभिषेकः
१९ विहित-जन्माभिषेकः	शान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोऽहं
२० शान्तिमुद्घोषयति, यथा ततोऽहं	कृतानुकारमिति कृत्वा,
२१ कृतानुकारमिति कृत्वा,	"महाजनो येन गतः स पन्थाः"
२२ "महाजनो येन गतः स पन्थाः"	इति भव्यजनैः सह समेत्य,
२३ इति भव्यजनैः सह समेत्य,	स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय,
२४ स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय,	शान्ति-मुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रा-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
२५ शान्ति-मुद्घोषयामि, तत्पूजा-यात्रा-	स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा
२६ स्नात्रादि-महोत्सवानन्तरमिति कृत्वा	कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥२॥

नोंध : निश० = निशम्यतां

२७ कर्णं दत्वा निश० निश० स्वाहा	ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्
२८ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्	भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः
२९ भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः	सर्वदर्शिन-स्त्रिलोकनाथा
३० सर्वदर्शिन-स्त्रिलोकनाथा	स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोकपूज्या
३१ स्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोकपूज्या	स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकराः ॥३॥
३२ स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकराः	ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-
३३ ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन	-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
३४ सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ	-सुविधि-शीतल श्रेयांस-वासुपूज्य
३५ सुविधि-शीतल श्रेयांस-वासुपूज्य	-विमल-अनन्त
३६ विमल-अनन्त	धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर
३७ धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर	मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि
३८ मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि	पार्श्व-वर्धमानान्ता जिना:
३९ पार्श्व-वर्धमानान्ता जिना:	शान्ता: शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा ॥४॥
४० शान्ता: शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा	ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा
४१ ॐ मुनयो मुनि-प्रवरा	रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-
४२ रिपु-विजय-दुर्भिक्ष-	कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु
४३ कान्तारेषु दुर्ग-मार्गेषु	रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥५॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
आद्याक्षर (ॐ ह्रीं, ॐ रो, ॐ आचा, ॐ ग्र, ॐ पु)	
४४ रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥	ॐ ह्रीं-श्री-धृति-मति-
४५ ॐ ह्रीं-श्री-धृति-मति-	कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-
४६ कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-	मेधा-विद्या-साधन-
४७ मेधा-विद्या-साधन-	प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो
४८ प्रवेश-निवेशनेषु सुगृहीत-नामानो	जयन्तु ते जिनेन्द्रा: ॥६॥
४९ जयन्तु ते जिनेन्द्रा: ॥	ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृङ्खला-
५० ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति वज्रशृङ्खला-	वज्राङ्कुशी-अप्रतिचक्रा-
५१ वज्राङ्कुशी-अप्रतिचक्रा-	पुरूषदत्ता-काली-महाकाली-

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
५२ पुरूषदत्ता-काली-महाकाली-	गौरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-
५३ गौरी-गान्धारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-	मानवी-वैरोट्या-अच्छुप्ता
५४ मानवी-वैरोट्या-अच्छुप्ता	मानसी-महामानसी षोडश विद्यादेव्यो
५५ मानसी-महामानसी षोडश विद्यादेव्यो	रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ॥७॥
५६ विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा	ॐ आचार्योपाध्याय
५७ ॐ आचार्योपाध्याय	प्रभृति-चातुर्वर्णस्य
५८ प्रभृति-चातुर्वर्णस्य	श्री-श्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु
५९ श्री-श्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु	तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥८॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
६० तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥	ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक-
६१ ॐ ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक-	बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-
६२ बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनैश्चर	राहु-केतु-सहिता: सलोक-पाला:
६३ राहु-केतु-सहिता: सलोक-पाला:	सोम-यम-वरुण-कुबेर-
६४ सोम-यम-वरुण-कुबेर-	वासवादित्य-स्कन्द-विनायकोपेता
६५ वासवादित्य-स्कन्द-विनायकोपेता	ये चान्येपि ग्राम-नगर-
६६ ये चान्येपि ग्राम-नगर-	क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां
६७ क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां	अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा
६८ अक्षीण-कोश-कोष्ठागारा	नर-पतयश्च भवन्तु स्वाहा ॥९॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
६९ नर-पतयश्च भवन्तु स्वाहा ॥९॥	ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-
७० ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-	सुहृत्-स्वजन-संबंधी-बंधुवर्ग-
७१ सुहृत्-स्वजन-संबंधी-बंधुवर्ग-	सहिताः नित्यंचामोद-प्रमोद-कारिणः ॥१०॥

आद्याक्षर (अस्मि, ॐ तु, श्री, शा, उन्मृ)

७२ सहिताः नित्यं चामोद-प्रमोद-कारिणः ॥	अस्मिंश्च-भूमण्डल आयतन-निवासि
७३ अस्मिंश्च-भूमण्डल आयतन-निवासि	साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां,
७४ साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाणां,	रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-
७५ रोगोपसर्ग-व्याधि-दुःख-दुर्भिक्ष-	दौर्मनस्यो-पशमनाय शान्तिर्भवतु ॥११॥

पंच प्रति० सूत्रोको कंठस्थ करनेके लिए "सूत्र कंठस्थ कला-१-२"

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
७६ दौर्मनस्यो-पशमनाय शान्तिर्भवतु ॥	ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-
७७ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-	मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि
७८ मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि	पापानि शाम्यन्तु दुरितानि,
७९ पापानि शाम्यन्तु दुरितानि	शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ॥१२॥
८० शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा	श्रीमते शान्ति-नाथाय
८१ श्रीमते शान्ति-नाथाय,	नमः शान्ति-विधायिने ।
८२ नमः शान्ति-विधायिने ।	त्रैलोक्य-स्यामराधीश
८३ त्रैलोक्य-स्यामराधीश	मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥१३॥

वंदित्तु, लघुशांति कंठस्थ करनेके लिए "वंदित्तु कंठस्थ कला"

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
८४ मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥	शान्तिः शान्ति-करः श्रीमान्,
८५ शान्तिः शान्ति-करः श्रीमान्,	शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।
८६ शान्तिं दिशतु मे गुरुः ।	शान्तिरेव सदा तेषां,
८७ शान्तिरेव सदा तेषां,	येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥१४॥
८८ तेषां येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥	उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-
८९ उन्मृष्ट-रिष्ट-दुष्ट-	ग्रह-गति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि ।
९० ग्रह-गति-दुःस्वप्न-दुर्निमित्तादि ।	संपादित-हित-संपन्,
९१ संपादित-हित-संपन्,	नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥१५॥

अतिचार कंठस्थ करनेके लिए "अतिचार कंठस्थ कला"

कडी-जोडाण	मूल-गाथा

आद्याक्षर (श्री, श्री, एषा, नृ, शि)

९२ संपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥	श्री सङ्घ-जगज्जनपद-
९३ श्री सङ्घ-जगज्जनपद-	राजाधिप-राज-सन्निवेशानाम् ।
९४ राजाधिप-राज-सन्निवेशानाम् ।	गोष्ठिक-पुर-मुख्याणां,
९५ गोष्ठिक-पुर-मुख्याणां,	व्याहरणै-व्याहरेच्छान्तिम् ॥१६॥
९६ व्याहरणै-व्याहरेच्छान्तिम् ॥	श्री-श्रमण-सङ्घस्य शान्तिर्भवतु ।
९७ श्री-श्रमण-सङ्घस्य शा०	श्री-जन-पदानां शान्तिर्भवतु ।
९८ श्री-जन-पदानां शा०	श्री-राजाधिपानां शान्तिर्भवतु ।
९९ श्री-राजाधिपानां शा०	श्री-राज-सन्निवेशानां शान्तिर्भवतु ।

शा० = शान्तिर्भवतु

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१०० श्री-राज-सन्निवेशानां शा०	श्री-गोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु ।
१०१ श्री-गोष्ठिकानां शा०	श्री-पौर-मुख्याणां शान्तिर्भवतु ।
१०२ श्री-पौर-मुख्याणां शा०	श्री-पौर-जनस्य शान्तिर्भवतु ।
१०३ श्री-पौर-जनस्य शा०	श्री-ब्रह्म-लोकस्य शान्तिर्भवतु ।
१०४ श्री-ब्रह्म-लोकस्य शा०	ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा,
१०५ ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा,	ॐ श्री-पार्श्व-नाथाय स्वाहा ॥ १७॥

शा० = शान्तिर्भवतु

१०६ ॐ श्री-पार्श्व-नाथाय स्वाहा ॥	एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-
१०७ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा-यात्रा-	स्नात्राद्यवसानेषु शान्ति-कलशं

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१०८ स्नात्राद्यवसानेषु शान्ति-कलशं	गृहीत्वा कुङ्कुम-चन्दन-कर्पूरागरु-
१०९ गृहीत्वा कुङ्कुम-चन्दन-कर्पूरागरु-	धूप-वास-कुसुमाञ्जलि-समेतः
११० धूप-वास-कुसुमाञ्जलि-समेतः	स्नात्र-चतुष्किकायां
१११ स्नात्र-चतुष्किकायां	श्री-सङ्घ-समेतः शुचि-शुचि-वपुः,
११२ श्री-सङ्घ-समेतः शुचि-शुचि-वपुः,	पुष्प-वस्त्र-चन्दना-भरणालङ्कृतः
११३ पुष्प-वस्त्र-चन्दना-भरणालङ्कृतः	पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा,
११४ पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा,	शान्ति-मुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीयं
११५ शान्ति-मुद्घोषयित्वा शान्ति-पानीयं	मस्तके दातव्यमिति ॥ १८॥

गाथाके बाद गाथा याद रखनेके लिए आद्याक्षर कार्ड

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
११६ मस्तके दातव्यमिति ॥	नृत्यन्ति नृत्यं मणि-पुष्प-वर्षं,
११७ नृत्यन्ति नृत्यं मणि-पुष्प-वर्षं,	सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि ।
११८ सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि ।	स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्,
११९ स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्,	कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१९॥
१२० कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥	शिव-मस्तु सर्व-जगतः,
१२१ शिव-मस्तु सर्व-जगतः,	पर-हित-निरता भवन्तु भूत-गणाः ।
१२२ पर-हित-निरता भवन्तु भूत-गणाः ।	दोषाः प्रयान्तु नाशं,
१२३ दोषाः प्रयान्तु नाशं,	सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥२०॥

"भक्तामर-कल्याण मंदिर कंठस्थ कला"

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
आद्याक्षर (अहं, उप, स)	
१२४ सर्वत्र सुखी भवतु लोकः ॥	अहं तित्थ-यर-माया,
१२५ अहं तित्थ-यर-माया,	सिवा-देवी तुम्ह नयर-निवासिनी
१२६ सिवा-देवी तुम्ह नयर-निवासिनी	अम्ह सिवं तुम्ह सिवं,
१२७ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं,	असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥२१॥
१२८ असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥	उपसर्गाः क्षयं यान्ति,
१२९ उपसर्गाः क्षयं यान्ति,	छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः ।
१३० छिद्यन्ते विघ्न-वल्लयः ।	मनः प्रसन्नता-मेति,
१३१ मनः प्रसन्नता-मेति,	पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥२२॥

कडी-जोडाण	मूल-गाथा
१३२ पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥	सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं,
१३३ सर्व-मङ्गल-माङ्गल्यं,	सर्व-कल्याण-कारणम्,
१३४ सर्व-कल्याण-कारणम्,	प्रधानं सर्व-धर्माणां,
१३५ प्रधानं सर्व-धर्माणां,	जैनं जयति शासनम् ॥२३॥

आद्याक्षर

१-५ (भो, भो, ॐ पु, ॐ ऋष, ॐ मु)

६-१० (ॐ ह्रीं, ॐ रो, ॐ आचा, ॐ ग्र, ॐ पु)

११-१५ (अस्मि, ॐ तु, श्री, शा, उन्मृ)

१६-२० (श्री, श्री, एषा, नृ, शि)

२१-२३ (अहं, उप, स)